

अनमोल दावा

संसार का कड़वा सब है,
इंसान अपने लिए नहीं
अपनों के लिए ज्यादा
परेशान होता है।

**कब रुकेगी हिंसा, विपक्ष शासित राज्यों
की छोटी घटना पर जवाबदाता करने वाली
केंद्र मणिपुर के मामले में साइलेंट क्यों?**

मणिपुर के मामले में केंद्र सरकार का रवैया भी शुरू से स्वालों के धेरे में रहा है जिन राज्यों में विपक्षी दलों की सरकारें हैं, उनसे छोटी-सी घटना पर भी केंद्रीय गृहमंत्रालय तुरंत जवाब तलब कर लेता है, मगर मणिपुर के मामले में मौन सधी हुए ही दिखता रहा।

एक भी ऐसा संकेत नजर नहीं आता, जिससे पता चले कि सरकार मणिपुर में हिंसा रोकने को लेकर गभीर है। सबा साल से ऊपर हो गए, मगर अब भी वहाँ कुकुर और मैतैर्ड समुदाय के बीच संघर्ष जारी है। इन समूहों के उग्रवादी संगठन लक्षित हिंसा करने लगे हैं। वे पहले दूसरे समूह के लोगों के घरों को चिह्नित करते हैं और फिर हमला कर देते हैं। इफल के पश्चात हिंसे में हुआ ताजा हमला तलब हो रहा है। उसमें एक महिला सहित दो लोगों की मौत हो गई और नौ घायल हो गए। घायलों को गोली लगी है।

इस घटना के बाद मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने सकल्प लिया है कि वे किसी भी चरमपंथी गढ़ को कट्टरपंथी और ग्रास्ट-विरोधी नहीं बनने देंगे। विचित्र है कि वे कई मौकों पर दोहरा चुके हैं कि स्थिति कबूल में है, अब वे अरमानबाई तेंगगोल जैसे चरमपंथी संगठनों पर शिकंजा करने की बात कर रहे हैं। मणिपुर सरकार के गृहमंत्रालय ने कहा है कि ताजा घटना में उग्रवादियों ने ड्रॉन का उपयोग कर लक्षित हिंसा की। समझना मुश्किल है कि मणिपुर में सक्रिय उग्रवादियों की गतिविधियों पर नजर रखना इतना मुश्किल क्यों बना हुआ है और वे कैसे अत्यधिक तकनीक और हथियारों का इस्तेमाल कर पा रहे हैं।

छिपी बात नहीं है कि मणिपुर का सारा संघर्ष सरकार की शिथिलता की बजह से पैदा हुआ है। शुरू में ही अगर सरकार ने दोनों समुदायों के बीच पैदा हुई गलतफहमी को दूर करने का प्रयास किया होता, तो वैमनस्थता की आग इस हद तक न भड़कने गती। मगर सरकार ने न तो तात्त्विकी की पहल की और न उपद्रवियों पर पाकाबू पाने की कोशिश। यहीं रह रही है कि पिछले वर्ष शुरू हुए हिंसा के बाद कई थानों और शास्त्रागारों से हथियार लूट लिए गए और उनका हिंसा में इस्तेमाल होता रहा।

पुलिस की मौजूदी में महिलाओं को निर्वस्त्र कर घमाने, उनसे बलाकार और उनकी हत्या तक की घटनाएं हो चुकी हैं। मगर उन पर कार्रवाई में तत्परता नहीं दिखाई गई। अब तक दो सौ से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। हजारों लोग अपना घर-बार छोड़ कर शिविरों में रहने को मजबूर हैं। हजारों घर और पूजा स्थल तोड़-फोड़-जला दिए गए। इतना कुछ हो जाने के बाद अगर सुकूप लगता है तो उपर्युक्त लोग भारी गृहणीय गृहमंत्रालय तुरंत जवाब तलब कर लेता है, मगर मणिपुर के मामले में केंद्र सरकार का रवैया भी शुरू से स्वालों के धेरे में रहा है। जिन राज्यों में विपक्षी दलों की सरकारें हैं, उनसे छोटी-सी घटना पर भी केंद्रीय गृहमंत्रालय तुरंत जवाब तलब कर लेता है, मगर मणिपुर के मामले में नहीं ही दिखता रहा।

पुलिस की मौजूदी में केंद्र सरकार का रवैया भी शुरू से स्वालों के धेरे में रहा है। जिन राज्यों में विपक्षी दलों की सरकारें हैं, उनसे छोटी-सी घटना पर भी केंद्रीय गृहमंत्रालय तुरंत जवाब तलब कर लेता है, मगर मणिपुर के मामले में नहीं ही दिखता रहा। शुरू-शुरू में वहाँ केंद्रीय सुकूप बलों को सख्ती के आदेश दिए गए थे, तब हिंसा रुक गई थी, मगर बाद में किस बजह से उस पर काबू पाने की कांशिश नहीं की गई, समझना मुश्किल है।

ऐसा नहीं माना जा सकता कि अगर केंद्र सरकार चाहे, तो वह मणिपुर जैसे छोटे राज्य में हिंसा को नहीं रोक सकती। इस मामले में मुख्यमंत्री की जवाबदाती भी तय नहीं की गई। सर्वोच्च न्यायालय ने स्वतं-संज्ञान लेते हुए वहाँ घटनाओं की जांच और राज्य पुलिस की कार्रवाईयों आदि पर नजर रखने के लिए एक दल गठित कर दिया, मगर राज्य सरकार के सहयोग के अभाव में उसके सकारात्मक नीति नजर नहीं आते।



मेष



कर्क



गुला



मकर

जाति के चक्रव्यूह में अपर कार्ट वूमन

शैतेन्द्र सिंह

समाज में एक बड़ा हिंसा अपर कार्ट वूमन का है, जो अधिकृत रूप से आत्मनिर्भर होते हुए भी हाशिए पर है और उसकी चर्चा कहीं नहीं हो रही।

मंत्री नियमित सोशल मीडिया में जब जवाब देते वित्त मंत्री की विपक्षी गांधी ने वित्त मंत्री के बजाए देते

राहुल गांधी नुस्खे और अधिकृत रूप से आत्मनिर्भर होते हुए वित्त मंत्री को बाज बाज देते

राहुल गांधी की जाति के बाज देते



गणेश चतुर्थी पर जरूर लगाएं इन चीजों का भोग, खुश हो जाएगे बप्पा मिलेगा आशीर्वाद

भगवान गणेश की अग्रधना के लिए गणेश चतुर्थी का समय बहुत खास होता है। इस दौरान बप्पा को उनके प्रिय भोग अर्पित करने से वे शीघ्र प्रसन्न होते हैं और मनोकामनाएं पूरी करते हैं।

गणेश जी के भोग गणेशोत्सव के 10 दिनों में यदि आप भगवान गणेश को उनके प्रिय बीजों भोग द्वारा अर्पित करेंगे तो इससे बप्पा शीघ्र ही प्रसन्न होंगे। आइए जानते हैं गणेश जी को कौन सी बीजें पसंद हैं।

मोदक-मोदक भगवान गणेश का सबसे प्रिय भोग है। विशेषकर गणेशजी सभी पूजा में मोदक का भोग लगाया जाता है।

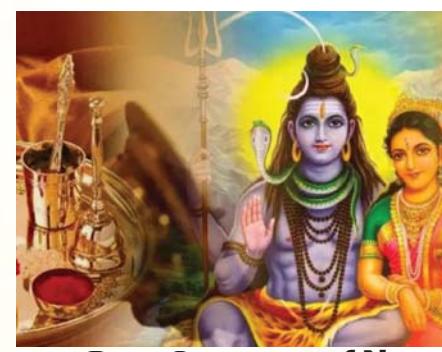
गणेशोत्सव के दूसरे दिन गणेश जी के लिए भोग द्वारा अर्पित करें। इससे बप्पा शीघ्र ही प्रसन्न होंगे। आइए जानते हैं गणेश जी को कौन सी बीजें पसंद हैं।

मान्यता है कि मोदक का भोग लगाने से भगवान अपने भक्तों को सुख-शोभाया का आशीर्वाद देते हैं। मालपुआ-मालपुआ का मीठा भोग शिवजी के साथ ही भगवान गणेश को भी पसंद है। इसलिए गणेश चतुर्थी के दौरान भगवान को इसका भोग जरूर लगाएं। इससे गणेश जी बहुत प्रसन्न होंगे।

मोदक के साथ ही गणेश जी को लड्डू भी पसंद हैं। आज बप्पा को यी से बने मोतीचूर, बेसन या बूंदी के लड्डू अर्पित कर सकते हैं।

मानाने की खीर : 10 दिनों तक चलने वाले गणेशोत्सव के दौरान गणेश जी को दूध और मानाने की खीर बनाकर भोग लगाएं। बाद में इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करें। एह भोग भगवान को लगाना बहुत शुभ मान जाता है।

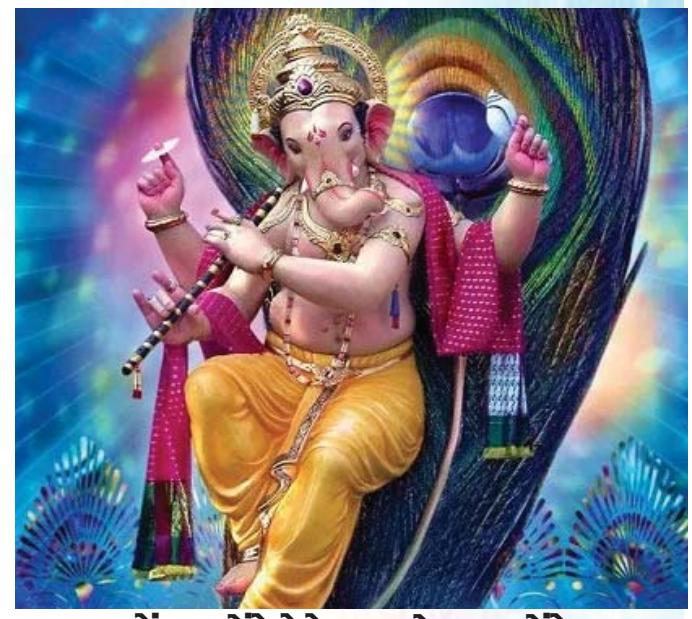
गुड़-भगवान भोग के साथ ही भक्त का भाव भी देवते हैं। इसलिए यदि आप किसी तरह का विशेष प्रसाद चढ़ाने में असमर्थ होते हैं तो गणेश जी को गुड़ का भोग लगा सकते हैं। गुड़ भी बप्पा को बहुत पसंद है और यह पारंपरिक भोग है।



हरतालिका तीज : शुभ मुहूर्त में पूजा करने से मिलेगा दोगुना फल, पति-पत्नी के रिश्ते होगे मजबूत

सनातन धर्म में कई महत्वपूर्ण पर्व मनाए जाते हैं। इनमें हरतालिका तीज का त्योहार भी शामिल है। पंचांग के अनुसार, हर वर्ष भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को हरतालिका तीज का त्योहार बेहूद उत्साह के साथ मनाया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस दृष्टि को करने से साधक का दैवालिक जीवन सटेव खुशहाल होता है और विवाह से जुड़ी सभी समस्याएँ दूर होती हैं। साथ ही पति-पत्नी के रिश्ते में मजबूती आती है। चलिए जानते हैं इस दिन भगवान शिव और मां पार्वती की पूजा किस

तरह करनी चाहिए। हरतालिका तीज शुभ मुहूर्त पंचांग के अनुसार, भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को शुरुआत 05 सितंबर को दोपहर 12 बजकर 21 मिनट पर होगी। वहीं, इस तिथि का समापन 06 सितंबर को दोपहर 03 बजकर 21 मिनट पर होगा। ऐसे में हरतालिका तीज का दृष्टि 06 सितंबर को दूर होगा। इस दिन भगवान शिव का शुभ मुहूर्त सुबह 06 बजकर 02 से सुबह 08 बजकर 33 मिनट तक है। इस मुहूर्त में उपासना करने से साधक को दोगुना फल प्राप्त होगा।



कलयुग में जब होगे ऐसे काम तो प्रकट होगे भगवान गणेश, कैसा होगा आठवां और अंतिम अवतार

पार्वती और शिव पुरु भगवान गणेश को बुद्धि-विद्या और सभी सिद्धियों का दाता कहा गया है। ये सभी देवताओं में वे सर्वप्रथम पूजनीय हैं। इसलिए शुभ-मांगलिक कार्यों के अंतर्में से पहले इनका पूजन किया जाता है। भगवान गणेश के जन्म को लेकर विभिन्न कथाएं व मान्यताएं प्रचलित हैं। हिंदू धर्म में भाद्रपद माह के शुक्लपक्ष की चतुर्थी तिथि को भगवान गणेश की जन्मतिथि मानी जाती है। इसलिए इस दिन गणेश चतुर्थी के रूप में भगवान गणेश का जन्मोत्सव मनाया जाता है, जोकि इस वर्ष 7 सितंबर 2024 को है। पुराणों में सतयुग, त्रेतायुग और द्वापर युग में भगवान गणेश के जन्म लेने का वर्णन मिलता है। लेकिन इसी के साथ भगवान गणेश कलयुग में भी अवतार लेंगे। ऐसी भविष्यवाणी गणेश पुराण में की गई है।

विभिन्न युगों में हुआ गणेश अवतार सतयुग : मान्यता है कि सतयुग में भगवान गणेश का जन्म विनाशक के रूप में हुआ। इस अवतार में उनका वाहन सतयुग, त्रेतायुग और द्वापर युग में भगवान गणेश के जन्म लेने का वर्णन मिलता है। लेकिन इसी के साथ भगवान गणेश कलयुग में भी अवतार लेंगे। ऐसी भविष्यवाणी गणेश पुराण में की गई है।

त्रेतायुग : इस युग में भगवान गणेश का जन्म उमा के गर्भ से हुआ, जिसमें उनका नाम गणेश पड़ा। इस अवतार में उनका वाहन मटूर, रंग क्षेत्र, छह भुताओं वाले और तीनों लोकों में विरक्तात हुए। भाद्रपद शुक्ल की चतुर्थी में जन्म लेने का विनाशक ठिक्या है। उन सबके अनुभव में आया है कि गणपति हमारे मूलाधार में वास कर रहे हैं।

द्वापर युग : द्वापर में भगवान गणेश का अवतार जगनान नाम से प्रसिद्ध है। इस युग में गणपति ने फिर से मां पार्वती के गर्भ से जन्म लिया। लेकिन जन्म के बाद किसी कारण माता पार्वती ने उनको जंगल में छोड़ दिया और उनका लालन-पालन पराशर मुनि द्वारा किया गया। इसी अवतार में ऋषि वेद व्यास के करने पर गणेश जी ने महाभारत लिया। साथ ही इस अवतार में उन्होंने सिंदुरासुर का वध किया।

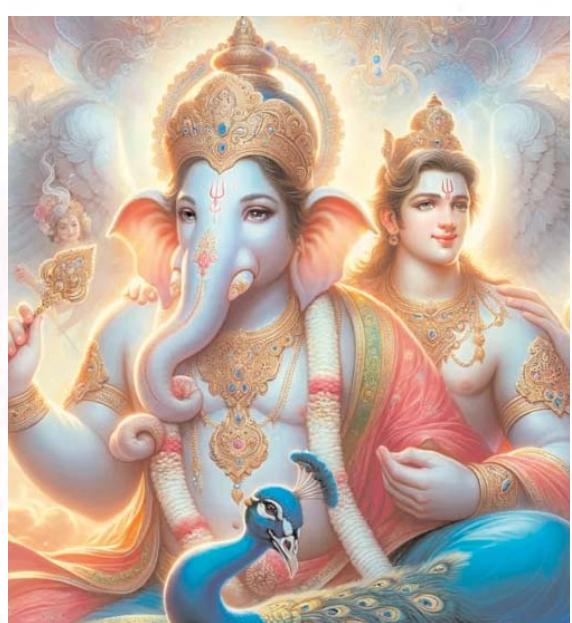
कलयुग : अब कलयुग के अंत में भी गणेश अवतार की भविष्यवाणी की गई है। कलयुग में जिस प्रकार से भगवान करेंगे।

विष्णु के कल्पित अवतार की बात कही गई है। उसी तरह भगवान गणेश के दृम्यके अवतार का भी उल्लेख विद्युत है। आइये जानते हैं कलयुग में कब और किस अवतार में आएंगे गणपति बप्पा। गणेश पुराण के अनुसार, जब ब्राह्मणों का ध्यान वेद अद्यायों से हटकर अन्य कामों में लगाने लगा। धरती पर तप, जप, यज्ञ और शुभ कार्य बंद हो जाएंगे तब धर्म की रक्षा की लिए भगवान का कलयुग अवतार प्रकट होगा। इसके साथ ही जब विद्वान लोग मूर्ख बन जाएंगे और एक दूजे को धोखा देकर लालचवश लाभ करमाएंगे। पराई शिव्यों पर बुरी दृष्टि रखेंगे और कमज़ोर लोगों पर बलवान का शोषण होने लगेगा जब गणेश जी का नया अवतार आएगा। गणेश पुराण में बताया गया है कि, जब लोग कलयुग में धर्म के मार्ग से हटकर देवताओं के बजाय दैत्यों या आसुरी शक्तियों की उपासना करने लगेंगे तब भगवान गणेश का कलयुग अवतार प्रकट होगा।

स्त्रियां अवयुपी होकर परिवर्ता धर्म को छोड़कर धन आदि के लिए अदर्म का रास्ता अपनाने लगेंगी, गुरुजन, परिजन और अतिथियों का अपमान करने लगेंगी तब भगवान गणेश का अवतार होगा।

कलयुग में कब और कैसा होगा भगवान गणेश का अवतार गणेश पुराण में भगवान गणेश से स्वरूप एरी भविष्यवाणी की है ठिं, कलियुग के अंत में भगवान गणेश का अवतार होगा, जिसका नाम धूमकेतु या शूपकण होगा। कलियुग में फैली बुराईयों, अदर्म और कूरीतियों को दूर करने के लिए भगवान इस अवतार में आएंगे। भगवान के हाथ में खड़ग होगा। ये चारभुजा युक्त होकर नीले रंग के पोङे में स्वरांकर पापियों का नाश कर फिर से सतयुग का सूत्रपात करेंगे।

बता दें कि धूमकेतु भगवान गणेश का आठवां और अंतिम अवतार होगा। इससे पहले उनके सात अवतार हैं- वक्रतुंड, एकदंत, महोदर, गजानन, लम्बोदर, विकट और विघ्नराज। धूमकेतु अवतार में वे भगवान विष्णु के कल्पित अवतार के साथ मिलकर मनुष्यों और धर्म की रक्षा के लिए अभिमानसुर का विनाश करेंगे।



जाता है। परब्रह्म अर्थात् वह एकमात्र ईश्वर, जो सभी वर्णनों और संकल्पनाओं से परे है। जिन-जिन योगियों ने ध्यान और चर्चाओं का अनुसंधान किया है, उन सबके अनुभव में आया है कि गणपति हमारे मूलाधार में वास कर रहे हैं। यह कपोल कल्पित नहीं है, वेरों में भी इसका उल्लेख है। आदि शक्तराचार्य ने गणेश जी के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा है, %अंत निर्विकल्प निराकार रूपम, जिसका कभी जन्म नहीं हुआ, जब्त कोई विकल्प या कोई विचार नहीं है और जिसका कोई आकार भी नहीं है; जो आनंद ही है और आनंद के बिना भी है और जो एक ही है, ऐसे गणपति परब्रह्म का रूप है। आपको मैं नमस्कार करता हूँ।

ऐसा माना जाता है कि लक्ष्मी जी की पूजा-अर्चना से साधक को धन की कमी नहीं सताती है। ऐसे में आप धन की देवी की कृपा प्राप्ति के लिए अपने यह में लक्ष्मी जी को प्रिय मानी गई कुछ चीजें रख सकते हैं। ऐसा करने से आपको जल्द ही अपनी रिश्ति में लाभ देखने को मिल सकती है। तो चलिए जानते हैं कि वह कौन-सी चीजें हैं। ऐसा करने से आपको जल्द ही अपनी रिश्ति में लाभ देखने को मिल सकती है। तो चलिए जानते हैं कि वह कौन-सी चीजें हैं। शुक्रवार का दिन मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्ति के लिए बहुत ही उत्तम माना जाता है। ऐसे में आप इसे अपने धन में स्थापित कर लक्ष्मी जी को प्रसन्न कर सकते हैं। इसके लिए मंदिर में लाल कपड़ा बिलाकर इशान कोण में श्रीटूंड्र की स्थापना करनी चाहिए और रोजाना विधि-विधान से इसकी पूजा-अर्चना करने क

